

मानव आदर्श व्यवस्था के कर्णधार प्रजापिता ब्रह्मा

काल के इस विकराल काल में भी अनेक महान् विभूतियों ने समय-समय पर वसुंधरा के आँचल को सुशोभित किया, परंतु उनके चले जाने के बाद पुनः धरती माँ की कोख सूनी हो गई। कुछ ही महान् पुरुष ऐसे हुए जो इस जननी को अपना महान् उत्तराधिकारी दे सकें। उनमें सर्व महान् हुए, नवयुग के सृष्टा प्रजापिता ब्रह्मा, जिन्होंने जगत को सहारा भी दिया और धीरे-धीरे भी बंधाया और अनेक महान् वत्स इसके आँगन को प्रफुल्लित करने वाले प्रदान किये जो कि साकार में मानो उनके ही रूप हैं। किसी भी महान् व्यक्ति को महानता इस बात से भी आँकी जा सकती है कि वह कितने महान् पुरुषों का निर्माण करता है।



डॉ. क. व. गंगाधर

एक मनुष्य को प्रजापिता ब्रह्मा कहना-शायद मनुष्यों के गले न भी उतरता हो, परंतु जो उन्हें जानते हैं, जिन्होंने उनके ब्रह्मा होने के कारणों पर ध्यान दिया हो वे इस सत्य से आँखें नहीं मूंद सकते। वे अनुभव कर सकते हैं कि कैसे पिताश्री भाग्य-विधाता प्रजापिता ब्रह्मा ही थे जिन्होंने इस सृष्टि पर वे आदर्श निर्माण किये जिन्हें अपनाकर मानव देवता और संसार स्वर्ग बन जाएगा। वे इस धरती पर रहकर एक महान् ऋषि बने और सर्वश्रेष्ठ कर्माती अवस्था को प्राप्त हुए। उन्हीं के अनुभवों के आधार पर यहाँ कर्माती अवस्था का उल्लेख किया गया है।

जनवरी मास प्रत्येक ब्रह्मा-वत्स के लिए अंतमूर्खों व एकांतवासी बनने का समय होता है। यह कुछ प्रेरणाएं लेकर आता है और वरदान देकर चला जाता है। जो योगी इस समय का पूर्ण लाभ उठाते हैं वे स्मृति स्वरूप होकर कर्माती स्थिति को ओर बढ़ जाते हैं। कर्माती अवस्था एक अत्यंत निराली, परम-आनंद युक्त, परमात्मा की समीपता की स्थिति है। तो आओ हम सब पिताश्री के पद जिन्हें पर चलकर कर्माती स्थिति को प्राप्त करें। -**कर्माती अवस्था क्या है?**

राजयोग-अभ्यास का लक्ष्य कर्माती होना है। राजयोग कर्मों में कुशलता लाकर, कर्मों को दिव्य बना देता है। कर्माती अर्थात् कर्मों से अतीत। पिछले 63 जन्मों में प्रत्येक आत्मा ने विकर्मों का जो विपुल भण्डार बनाया है, उसे योगानि में भस्म करके विकर्म-मुक्त होना कर्माती बनना है। हम देखते हैं कि प्रत्येक कर्म, उसके संकल्प व उसका चिन्तन या बोझ मनुष्य पर प्रभाव डालता है। परंतु कर्म करते हुए, कर्मों के प्रभाव से परे हो जाना-इसे कर्माती अवस्था कहा जाता है। किसी के पास चाहे अथाह धन, सम्पत्ति व वैभव हों और वह उनका प्रयोग भी करता हो परंतु पदार्थों का प्रयोग योगयुक्त होकर करना व पदार्थों का उपभोग अनासक्त होकर करना-ये ही कर्माती स्थिति। ऐसा न हो कि पदार्थ ही हमारा उपभोग करते रहें। अपने पूर्व जन्मों के व वर्तमान के विकर्मों के कारण मनुष्य अनेक बंधनों में बंधा हुआ है। तन, मन व संबंधों के बंधन उसे चिंतित करते हैं। परंतु कर्माती अवस्था पूर्ण बंधनमुक्त अवस्था है। जब मनुष्यात्मा के संपूर्ण बंधन समाप्त हो जाएं, कुछ भी उसे योगयुक्त स्थिति से नीचे न लाए, यही योगी की कर्माती अवस्था है। परंतु जैसा कि शास्त्रवादी लोग मानते हैं कि इस मुक्त स्थिति में आत्मा पाप व पुण्य दोनों कर्म से मुक्त हो जाती है, ऐसा ईश्वरीय मत नहीं है। इस मुक्त कर्माती अवस्था में विकर्मों का संपूर्ण अभाव व पुण्य कर्मों की संपूर्णता होती है। कर्माती अवस्था के समीप पहुँचा हुआ योगी विकर्माजीत बन जाता है अर्थात् उससे कोई सूक्ष्म विकर्म भी नहीं होता और पुण्य कर्म भी वह संपूर्ण अनासक्त भाव से करता है। इन्हीं पुण्य कर्मों का बल उसे कर्माती से संपूर्ण बनने में मदद करता है।

पिताश्री ब्रह्मा बाबा ने ऐसी ही श्रेष्ठ कर्माती अवस्था को प्राप्त किया। स्मृति-दिवस हमें भी इसी प्रकार बंधन-मुक्त बनने की प्रेरणा देता है। इस कर्माती अवस्था के समीप पहुँचकर मन पूर्णतया विरक्त हो जाता है, उसके सभी आकर्षण समाप्त हो जाते हैं और वह निरंतर योग की आनंदकारी स्थिति में स्थित हो जाता है। वे मानव मन की शांति के सुकून-कर्ता थे। उन्होंने मानव-मन में बल भरने के साथ ही स्व ऊर्जा संचारित कर एक आदर्श जीवन व्यवस्था बनाई। ऐसे जीवन प्रणोता को 18 जनवरी विश्व शांति दिवस पर शत शत नमन।

बाबा से मैंने सीखा...

मैंने देखा कि वे एक सच्चे पिता थे। उनसे सभी को पिता-पन का आभास होता था। हम उनके द्वारा ईश्वरीय ज्ञान सुनकर उत्पन्न हुए, इसलिए हम उनको मुख सन्तान कहलाये। उनके अत्यंत होने के बाद जो उनके बच्चे बने, उनके लिए बाबा प्रजापिता हैं और जो उन्हें अंत में पहचानेंगे, वे उन्हें जगतपिता कहेंगे। हमें महसूस होता है कि थोड़े ही समय में समस्त विश्व उन्हें जगत पिता मानेगा अपने अनुभवों के आधार पर। मुझे उनसे बार-बार प्रेरणाएं मिलीं कि जैसी भासना हमें बाबा ने दी वैसी ही भासना हम दूसरों को दें। जैसे बाबा ने हमें पालकर बड़ा किया, वैसे ही हम दूसरों को पालना दे बड़ा करें। भले ही हम जगत पिता तो नहीं हैं, परंतु हैं तो उनके ही महान् बच्चे... बाबा सदा कहते थे कि सब कुछ शिव बाबा ही करता है या बच्चे करते हैं। अपने को सदा ही छिपाये रखा व बच्चों को स्वमान देना-यही महानता हमने बाबा से सीखी। मुझे इस बात का सदा ख्याल रहता है कि कर्त्तापन का तनिक भी भान न आये।

हमें बाबा ने सिखाया कि शिव बाबा से ईमानदार कैसे रहना चाहिए। सम्पूर्ण सम्पत्ति का, चाहे वह उनकी स्वयं की थी या अन्य आत्माओं ने यज्ञ में दी थी वे उसके सम्पूर्ण धृष्टी थे। यही विशेषता उन्होंने हमें सिखाई। इसी ईमानदारी से हमारा सारा व्यवहार सरल हो गया, हम भगवान के समीप आ गये और हमारी अधीनता भी समाप्त हो

गई। मैंने ज्ञान मंथन करने की मुख्य विशेषता बाबा से सीखी। शिवबाबा के ज्ञान पर मंथन कैसे करें ताकि अपनी बुद्धि का ज़रा भी अहंकार न रहे? -यह बाबा में प्रत्यक्ष देखा। बाबा ने हमें सिखाया कि आपस में अलौकिक वातावरण कैसा होता है, अलौकिक भाषा कैसी होती है तथा अलौकिक संबंध कैसा होता है। जब भी बाबा के पास जाते-ये तीनों बातों स्पष्ट देखने में आती थीं। बाबा के पास किसी भी तरह की लौकिकता नज़र नहीं आती थी। वास्तव में लौकिकता से दिव्यता मिस हो जाती है। बाबा ने हमें सिखाया कि हम संसार में कैसे रहें, शिव बाबा से कैसे रहें, अपने से कैसे रहें, अपने को कैसे रखें, अपना स्वमान दूसरी मुख्य बात-मैंने बाबा में देखी कि बाबा में तनिक भी कर्त्तापन का भान नहीं था।

बाबा को सदा ही हमने पूरी अर्थांरिटी में देखा। परिस्थितियों में बाबा कहते थे कि तुम डरो नहीं। सब बाबा के ही बच्चे हैं। इस प्रकार बाबा ने हमें अति निर्भय बना दिया। बाबा अपनी एनर्जी वेस्ट नहीं होने देता था। सदा यही संकल्प रखता था कि मेरी एनर्जी सभी को मिलती रहे। बाबा अन्दर ही अन्दर शिव बाबा से एनर्जी खिंचते रहते थे। मुझे कभी-कभी सोलह-सोलह घंटे भी कार्यक्रमों में रहना पड़ता है, परंतु मुझे नहीं लगता कि मेरी एनर्जी नष्ट हो रही है। सदा शक्ति बढ़ने का ही अनुभव रहता है। इसी तरह जब मैं किसी बड़े प्रोग्राम में होती हूँ, तो मुझे कभी हौन भावना नहीं

आती। टॉपिक चाहे कैसा भी हो, जब तक दूसरे वक्ता भाषण करते हैं, मैं योग-युक्त होकर साइलेंट की शक्ति इकट्ठी करती रहती हूँ। यद्यपि मैं उनको भाषा नहीं समझती, तो भी मुझे ये ख्याल नहीं आते कि इन्होंने क्या बोला या मैं अच्छा बोलूँ, पता नहीं इन्हें अच्छा लगेगा या नहीं? मुझे इस तरह की कोई भी उलझन नहीं होती। मैं अपनी श्रेष्ठ स्थिति में रहती हूँ और सब कुछ श्रेष्ठ होता है। सेवा के लिए बाबा ने हमें बहुत कुछ सिखाया। समानता में रहने का बीज डाल दिया, हिम्मत से भरपूर कर दिया, आध्यात्मिक शक्ति भर दी जो कि आज विश्व सेवा में काम आ रही है। आज दुनिया में अनेक आत्माएं सत्य की व्यास हैं, हमें रहता है कि इन्हें कुछ दें।

सेवा में मैं निमित्त बने हुए हूँ। का अधिक ध्यान रखती हूँ, यही बाबा से सीखा है। मैं ही करूँ-यह संकल्प कम रहता है। बाबा ने कूट-कूट कर भर दिया है कि सेवा में अनासक्त वृत्ति ही सफलता का आधार है। जो हुआ वो भी याद नहीं, जो होगा उसको भी चिन्ता नहीं। सेवा के लिए मन में उलझन नहीं, उमंग अवश्य है। संशय भी नहीं रहता कि सफलता होगी या नहीं। मुझे कभी फल देखने की इच्छा नहीं होती कि हमने जो सेवा की उसका फल क्या निकला। बाबा ने सिखा दिया कि डाला हुआ बीज कभी निफल नहीं जाता। ऐसे सच्चे पिता पर ये मन कुर्बान है।



दादी जानकी, मुख प्रशासिका

साइड सीन को साइड कर आगे बढ़ो



दादी हृदयमोहिनी
अति-मुख प्रशासिका

सेवाधारी जब सेवा कर रहे हैं तो सेवाधारी माना ही निरहंकारी। लेकिन होता क्या है, जब सेवा में या कोई काम में बिजो हो जाते हैं तो उस सेवा का अर्थात् कर्म का प्रभाव हलचल में ले आता है। उस तरफ, उन्हीं बातों में अटेन्शन ज्यादा चला जाता है और जो मन्सा हमको पॉवरफुल रखनी है उसमें कमी हो जाती है। तो यह हमको बैलेन्स रखना पड़ेगा। मन्सा, वाचा और कर्मणा तीनों में अगर हमारा बैलेन्स होगा तो जहाँ बैलेन्स है वहाँ ब्लैसिंग है ही क्योंकि अगर बाबा की ब्लैसिंग लेनी है तो हम जो भी सेवा करते हैं, अपने पुरुषार्थ अनुसार जितनी अवस्था होती है उतना करते हैं। लेकिन हर कार्य में हमें बाबा की ब्लैसिंग भी हो, उसके लिए हमको इन तीनों ही स्टेज का बैलेन्स रखना पड़ेगा। इस बैलेन्स से ही ब्लैसिंग मिलेगी और ब्लैसिंग से क्या नहीं हो सकता है! दुनिया वाले तो कहते हैं भगवान अगर चाहे तो क्या नहीं कर सकता है। वह तो कहते हैं मुर्दे को ज़िन्दा कर सकता है लेकिन हम समझते हैं जो माया से मूर्छित वा मुर्दे हुए पड़े हैं, उन्हीं को तो ज़िन्दा कर ही

सकते हैं। तो इस बात पर हमको थोड़ा सा और अटेन्शन देना चाहिए। बाकी समस्याएँ तो आयेगी और भी आगे चलकर बढ़ेंगी, कम नहीं होंगी। ऐसे नहीं थोड़ी हलचल होगी तो वैराग्य आयेगा और समस्याएँ कम हो जायेंगी। फिर दूसरे प्रकार से आयेगी। जो अभी आती हैं उस रूप की नहीं, लेकिन दूसरे रूप से आयेगी। एक पेपर होता है 3 मास का, दूसरा 6 मास का और फिर होता है फाइनल पेपर। तो लास्ट फाइनल पेपर होना ही है। तो समस्याओं को ऐसे ही समझना चाहिए कि यह तो हमको पास करनी ही हैं। यह साइडसीन हैं। आप मंजिल पर चल रहे हैं, उसमें साइडसीन होवे ही नहीं, यह हो सकता है! कहाँ से भी जाओ लेकिन सब सीन तो होंगे ही। तो अगर हमको मंजिल पर पहुँचना है, सम्पूर्ण बाप समान बनना है तो साइडसीन आयेगी। लेकिन बाबा कहते तुम तूफान को तूफान नहीं समझो, तोहफा समझो तो बहुत मजा आयेगा क्योंकि जो भी समस्या आती है वह हमको ज़रूर कोई पाठ पढ़ाकर जाती है। ज्यादा से ज्यादा तो ग्लानि का ही असर आता है, समझो कोई ग्लानि करता है, बात हुई नहीं, मैंने ठीक किया। लेकिन दूसरा मुझे पूरा ही गलत मानकर कहता है कि तुम तो हो ही गलत। तो ऐसी समस्याएँ

जब आती हैं तो अंदर से आता है कि यह झूठ क्यों बोलता है, यह मिसअण्डरस्टैंड क्यों करता है! संगठन में यही थोड़ा बहुत आता है। बाबा तो कहता है ग्लानि को करो, उसको गले लगाओ। कहाँ ग्लानि और कहाँ गले लगाओ, इसमें चाहिए सहनशक्ति। वह गाली दे और हमें अंदर जोश भी न आये, ऐसे टाइम पर ही मुझे सहनशीलता काम में लानी है। बड़ी बात को छोटा करने के लिए इस सहनशीलता के पेपर में पास होना पड़ेगा। इस पेपर को पास करने का मन में संकल्प हो तो किसी के प्रति घृणा भी नहीं आयेगी और पेपर में सहज पर चल भी जायेगी क्योंकि जब मिसअण्डरस्टैंडिंग होती है तो जोश आता है। मैं सिद्ध करूँ कि मैं राँग नहीं हूँ, चलो और कुछ न करूँ लेकिन यह तो उसको साबित करूँ कि मैं राइट हूँ, तुम राँग हो। लेकिन राँग वाला कभी अपने को राँग नहीं समझता है क्योंकि उस समय वर परवश होता है। इसीलिए बाबा ने कहा है तूफान को तोहफा समझो। समस्याओं से घबराओ नहीं। जिसमें सहनशक्ति होगी वह जोश में नहीं आयेगा। सहनशक्ति से निर्णय कर सकेंगे। नहीं तो वह निर्णय भी ठीक नहीं होता है।